ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के मानवतावादी दर्शन एवं उसकी प्रासंगिकता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे

दर्शनशास्त्र विभाग
में
पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध निर्देशक
डॉ. रीता कुमारी शर्मा
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग
विनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय
धनबाद, झारखण्ड

शोधार्थी
मौमीता बसु

मानविकी संकाय,
विनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद
2021

परिचय Introduction :

''ईश्वरचन्द्र बंदोपाध्याय एक मानवतावादी, शिक्षक और समाज सुधारक थे। उनका जन्म 26 सितम्बर 1820 को मेदिनीपुर के वीर सिंह गाँव, घाटाल, बंगाल के एक निर्धन बंगाली रूढ़िवादी परिवार में हुआ था। वे स्वतंत्रता सेनानी भी थे। बंगाली गद्य को सरल बनाने के लिए उनका प्रयास काफी सराहनीय था जिसके करण बंगाला शिक्षा प्रणाली में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दी। विद्यासागर बंगाली भाषा को परिष्कृत किया जिसके कारण इन्हे बंगला भाषा के जनक के रूप में जाने जाते हैं। ईष्वर चन्द्र संस्कृत और दर्शनशास्त्र में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण 'विद्यासागर' की विशिष्ट उपाधि प्राप्त की। वे 1849 ई. में कलकत्ता में अन्य सक्रिय सुधारकों के साथ मिलकर महिलाओं के उत्थान हेतू स्कूल की स्थापना की। तत्कालीन हिन्दूओं में विधवा महिलाएं अनेक रूप से शोषित और असहाय हुआ करती थी। इन्होंने महिलाओं के पुनरूत्थान के लिए विधवा पुनर्विवाह प्रथा की शुरुआत की और जनजागृति का कार्या किया। इनके प्रयासों से 1856 ई. में विधवा महिला पुनर्विवाह अधिनियम लाया गया। साथ ही इन्होंने बाल विवाह तथा बहुपत्नी प्रथा का भी सार्थक विरोध किया। ईश्वरचन्द्र 19वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध बुद्धिजीवी, दार्षनिक, समाज सुधारक, लेखक, उद्यमी और मानवता के कट्टर अनुयायी थे। विद्या के सागर तथा स्वावलम्बन के जीवन्त प्रतीक ये अपने नाम के अनुरूप ही विलक्षण गुणों के विषिष्ट प्रतिभा थे।''[1] उनकी मृत्यु 29 जुलाई 1891 को कोलकाता, बंगाल में हो गई थी।

''साहित्य के क्षेत्र में ईष्वर चन्द्र विद्यासागर को बंगला गद्य के प्रथम प्रवर्तकों में एक माना जाते थे। इन्होंने 52पुस्तकों की रचना की, जिनमें 30 बंगला में, 17संस्कृत में तथा पाँच अंग्रेजी भाषा में प्रकाषित की। 'शकुंतला' 'वैताल पंचविंशति', 'भ्राँतिबिलाश' तथा 'सीता वनवास' इनकी अनुपम साहित्यकीर्ति है।''[2]

''उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मानव हित और मानव भलाई के लिए अनेको मानवतावादी संगठनों का गठन हुआ। फ्रांस क्रांति समाप्त होने के बाद ही विचार आया कि मानव की भलाई का कार्य परम्परागत धार्मिक संगठनों के द्वारा नहीं संभव है। ऑक्सफोर्ड इंग्लिष शब्दकोश में हुमैनिज्म शब्द का प्रयोग पहली बार 1812 में अंग्रेज पादरियों द्वारा किया गया था।''[3]

''मानवतावाद नामक जीवन दर्शन का प्रचलन पाष्चात्य दर्शन की एक चित्तवृत्ति के रूप में उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ और समाज, संस्कृति और विज्ञान के उत्थान के साथ–साथ मानवतावाद का भी बढ़ावा होता गया। मानवतावाद मानवीयज्ञान की अंतिम उपलब्धि अर्थात सम्पूर्णता को खोजता है और इस रूप में मानवतावाद मानव हित के लिए स्वविवेक और समझदारी पर जोर देता है।''[4]

''भारतीय दर्शन में मानवतावाद भारत के पुरातन वैदिक तथा संस्कृत साहित्य में मौजूद है। वैदिककालीन मानवतावाद को सम्पूर्ण जीवन दृष्टि के रूप मैं देख शक्ते है। मानवतावाद ज्ञान, न्याय तथा नैतिकता का अनुसरण करती है। मानवतावाद मानवीय तर्क के माध्यम से अलौकिकतावाद, ढकोसला और अंधविष्वास को अस्वीकार करती है। बहुत र्से मानवतावादी मानव के उन्नत या समृद्ध स्थिति के लिए कर्तव्यपरायण नियम प्राकृतिक परम्परा' या दर्शन से लेते हैं। पर नैतिक नियम मानव हित के लिए सर्वथा उपयुक्त नहीं होते हैं।''[5]

''मानवतावाद लोक तांत्रिक व्यवस्था पर स्थापित एक नीति संबंधी जीवन दर्शन है, जो मानव को अपने जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए आधार प्रदान करती है। मानवतावाद प्राकृतिक सिद्धांतों पर स्थापित नैतिकता के माध्यम से मानवता वादियों द्वारा और अधिक नैतिक समाज का गठन करते है।''[6] ईश्वरचन्द विद्यासागर एक प्रसिद्ध मानवता के कट्टर अनुयायी थे। विद्यासागर कभी भी मानव के वास्तविक जीवन में अलौकिक सोच को स्वीकार नहीं करते थे।

मानवतावाद हमेषा पृथ्वी पर निवास करने वाले प्रजातियों और उनके जीवन पद्धति को पथ–प्रदर्षित करता है। इनका स्पष्ट अभिमत है कि प्रत्येक मानवतावाद मानव की उदारचरित भावनाओ और कार्य के प्रति दायित्वों पर विचार करते हुए अपने क्षेत्र को विस्तृत बनाता है।

वर्तमान समय में मानवतावाद यह स्पष्ट अभिमत देता है कि मानव संबंधी शासन व्यवस्था संयोजित होनी चाहिए और यह समस्त जगहों पर लागु होनी चाहिए। अतः इस रूप में वर्तमान समय में मानवता अघोषित रूप से सर्वव्याप्त है जो मनुष्य के निजी जीवन में आदर्षो और मूल्यों की स्थापना में मदद करता है।

आधुनिकता मानवतावाद प्रत्येक मनुष्य को आशावादी बनाता है और व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप मानवतावादी भी बनाता है। परन्तु कोई भी व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुरूप

मानवतावादी आदर्षो का अनुसरण कर भी सकता है या नहीं भी। चूँकि मानव का अंतिम लक्ष्य समृद्धि से है, जो इंसानों के जीवन को सभी प्रकार से बेहतर बनाता है जो भौतिक सामाग्रियों की उपलब्धता पर भी निर्भर करता है। मानव बुद्धिमान प्राणी है जो अपनी सम्पूर्णता में सभी लोगों के मानवीय हित और भलाई को बढ़ावा देता है। मानवतावाद का मूल संकेन्द्रण लोगों की भलाई करने और पृथ्वी पर अच्छी तरह से जीवन जीने पर केन्द्रित है। यह अभिमत उनके जीवन पद्धति और कार्य पद्धति में चित्रित और स्वयंसिद्ध है।

मानवतावाद के जरिये मानवीय सम्बंधों को सुव्यवस्थित करना चाहिए। सभी व्यक्ति जो पृथ्वी पर अवस्थित है, सभी एक ही परमात्मा के भाग हैं। मूल प्रकृति ने मानव को एक ही स्रोत से उत्पन्न किया है और एक ही में समाप्त (मृत्यु) होने के लिये बनाया है। उस परम पिता परमात्मा ने प्रत्येक मानव के दिल में पारस्परिक प्रेम और स्नेह का भाव दिया है। उस परम पिता परमात्मा ने मानव को सच के साथ रहना, निष्पक्ष व्यवहार करना तथा सहनशीलता सिखाया है। परम पिता परमात्मा ने मानव को जरूरत पड़ने पर सभी के लिए आगे बढ़ने और हाथ बढ़ाने का भाव रखती है और यही मानवता है।

मानवतावाद दर्शन शास्त्र में उस सिद्धांत को प्रदर्शित करती हैं जो मनुष्यों के जीने के लिए आवष्यक सिद्धांतों और उनसे सम्बन्धित मानवीय तथ्यों पर ध्यान देती है। वे सामाजिक सुधार आंदोलन के अग्रणी तथा बंगाल पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक थे। इस आंदोलन में दो प्रकार के लोग थे। एक वे थे जो दैवीय शक्ति, पवित्र आत्मा, दया तथा पवित्रता से प्रेरित होकर सामाजिक तथा धार्मिक संगठनों का नवनिर्माण करना चाहते थे तथा समाज का पोषण पवित्रता का आदर्ष रखकर सार्वभौमिक भ्रातृत्व की भावना पर करना चाहते थे। इसके विपरीत कुछ लोग नई विद्वता और नवीन ज्ञान दर्षन से प्रभावित होकर नैतिक विकास के लिए मानवीय बुद्धि के प्रयोग पर विष्वास करते थे। ऐसे ही लोगों की श्रेणी में ईश्वरचंद्र थे। इन्होंने दया के स्थान पर प्रकृति, धर्म के स्थान पर नैतिकता और भाग्य के स्थान पर कर्म को महत्व दिया। ये लोग मानव विचार का परिष्कार बौद्धिक अनुशासन द्वारा मानते हैं। इस प्रकार पुनर्जागरण का यह आंदोलन कला और साहित्य को बौद्धिक शैली देने के लिए फैला और मानव मूल्यों को अधिक–से अधिक उदार रूप में प्रस्तुत करने का कोशिश किया गया। भारतीय दर्शन के क्षेत्र में यही विचार बाद में मानवतावाद के नाम से विख्यात हुआ।

<u>उपलब्ध साहित्य Preliminary Review of Literature :</u>

''मिलेट्स के दार्शनिक थेल्स एवं कालफन के दार्शनिक जेनोफेन्स ने ब्रम्हांड की व्याख्या परम्परा और धर्म के बजाय मानवीय नैतिकता के आधार में किया है। दार्शनिक विचारक थेल्स स्त्री–पुरूष रूपी देवी–देवताओं की पुजा व विष्वास पर प्रष्न खड़ा कर दिया कि इनकी उपस्थिति असंभव है। समकालीन दार्षनिक जेनोफेन्स भी देवी–देवताओं की उपस्थिति मानने से इंकार कर दिया। संभवतः पष्चिमी विचारको में से सबसे पहले दार्शनिक थे जो मानवतावाद के प्राक्कथन को बौद्धिक तत्वों पर विश्लेषण की।''[7] – **(हुमेनिज्म एण्ड मोरल थ्योरी)**

''सन् 1853 में ब्रिटेन में सबसे पहला धार्मिक संगठन मानवतावादी संगठन के रूप में आया। यह मानवतावादी संगठनलोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत संगठित था। इस संगठन के सदस्यों का चयन चुनाव पद्धति के तहत होता था। यह मानवतावादी संगठन मानवीय ज्ञान, मानवीय दर्शन और मानवीय कलाओं को खुब प्रचारित–प्रसारित किया।''[8] – **(हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी)**

''स्पेनिसमानवतावादी जुआन लुईस वाइब्स ने अरस्तु द्वारा निर्मित दर्शनशास्त्र के पाठ्यक्रम को अधिक अच्छा बनाने के लिए व्यवहारिकज्ञान के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया। इस व्यवहारिक मानवतावाद के प्रचार–प्रसार से मध्यकाल की रूढ़िवादिता बहुत हद तक कम हो गई। इस प्रकार अनुभवसिद्ध दर्शन और प्राकृतिक दर्शन को मध्यकाल के लोग अपनाने लगे। इस प्रकार नव पुनर्जागरण का रास्ता प्रषस्त हो गया और वैज्ञानिक क्रांति का सूत्रपात हो गया।''[9] – **(हुमैनिज्म : ए न्यू रिलीजन)**

''मेरी एन. इवांस मानवतावाद पर लिखा है कि मानव विकास का मूल तत्व व्यक्ति का सामाजिक और नैतिक अभ्युदय रहा है। ईश्वर की अवधारणा एक अच्छाई एवं उच्च संस्कृति का प्रभाव है जो पुरी तरह से मानवीय संवेदनाओं पर आधारित है ।''[10] – **(डेवलपमेंट ऑफ मोरल फिलोसफी इन इंडिया)**

''रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विद्यासागर के बारे में लिखा था कि आष्चर्य है कि बंगालियों की इतनी बड़ी जनसंख्या में ईश्वरचन्द्र को विद्या के सागर के रूप में धरती पर अवतरित किया। ये काफी होनहार बुद्धिजीवी और समाज सुधारक थे। ये बंगाल की गिरती समाज व्यवस्था को

उपर उठाने के लिए प्रतिबद्ध महामानव थे। संस्कृत, बंगाली गद्य तथा दर्षन में विषिष्ट ज्ञान होने के कारण संस्कृतमहाविद्यालय ने उनको 'विद्यासागर' की जीवन्त उपाधि प्रदान की। इसलिए इनका नाम बाद में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर हो गया ।"[11] – **(रिलीजन ऑफ मैन)**

"जार्ज वोइट ने सन 1856 ई. मेंमानवतावाद शब्द का प्रयोग किया था। मानवतावाद शब्द की व्याख्या मध्यकाल की रूढ़िवादिता हटाने के लिए और नव पुनर्जागरण लाने के लिए किया था। तत्कालीन शिक्षा को नवजीवन देने के लिए परम्परागत शिक्षा से मानवतावादी विचारों को लेकर लोगों को पुनर्जागृत किया गया।"[12]

"मध्यकाल अनेक अंधविष्वास और रूढ़िवादी विचारों से भरा काल था। इन रूढ़िवादी विचारों से छुटकारा पाने के लिए नवजागरण लाना आवष्यक था। इसी क्रम में पेट्रार्क इस नवजागरण आंदोलन के प्रणेता के रूप थे और सम्भवतः इस काल के पहले मानवतावादी विचारक भी थे।"[12] – **(ह्युमनिज्मः दी न्यू क्रिटिकल इडीअम)**

"दार्शनिक विचारक पेट्रार्क ने लिखा है कि व्याकरण की दृष्टि से जब लोग जानकारी अर्जित कर लेग तो इसका उपयोग विस्तार रूप से वर्णन देने के लिए किया गया। इससे मानवतावादी विचार उत्तरोत्तर सम्पुष्ट होता गया। हालाँकि पेट्रार्क मानते हैं कि दुनिया की वास्तविकता जानने से अच्छी है कि दुनिया के मानवीय मूल्यों को समझा जाय।"[13] – **(द ह्युमेनिटी ऑफ मैन)**

"न्यूयार्क का 'न्यूयार्कसोसायटी फॉर एथिकल्चर' से नैतिक आंदोलन संचालित होता था। सन् 2008 में नैतिक संस्कृति के प्रणेताओं ने लिखा कि आज व्यक्ति की पहचान उनकी संस्कृति तथा मानववादी विचारों से होती है।"[14] – **(जैक्स मरीटेन, ट्रू हुमैनिज्म)**।

"चार्ल्स फ्रांसिस पोटर ने मानवतावाद के बारे में लिखा है कि आज कोई भी विचार समन्वयात्मक या गत्यात्मक हो, इसके लिए उन विचारों में लचीलापन होनी चाहिए अर्थात समय व परिस्थिति के अनुसार विचार अपनी जरूरतों के अनुसार परिवर्तित हो जाय। ऐसे तथ्यात्मक विचार जो आसानी से परिवर्तित हो जाय, इस युग की एक प्रमुख आवष्यकता है।"[15] – **(हुमैनिज्म : ए न्यू रिलीजन)**

"सन् 1933 में धार्मिक प्रणेताओं ने अपने आप को धार्मिकमानवतावादी रूप में प्रकट किया। उस समय का तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं को परम्परागत धर्म पुरा नहीं कर

पा रहा था। इसलिए 1933 के मानवतावादियों ने एक ऐसे नैतिक धर्म का शुभारम्भ किया गया जिससे लोगों की जरूरतों को पुरा किया गया और यह धर्म मानवतावादी विचारों पर आधारित धर्म है।"[15] – **(हुमैनिज्म : ए न्यू रिलीजन)**

"पालकुर्त्ज और एडविन.एच. विल्सन (1973) दोनों मानवतावादी विचारक हैं जो इस बात पर बल देते हैं कि मनुष्य को सदैव आशावादी दृष्टि बनाये रखने के लिए विश्वास और मानवतावादी विचारों की मुलभूत आवष्यकता है। उन लोगों ने अपने मानवीय विचारों के एक खण्ड में सामान्य धर्म और राजकीय धर्म को मनुष्य–जाति के लिए निरर्थक होने का विष्लेषण करता है तथा दूसरे खण्ड में बौद्धिक आंदोलन के तर्क, वैज्ञानिक, जो प्रजातंत्र के सिद्धांत के अनुसार हो, नीति के अनुरूप मानवतावाद पर बल देता है।"[16] – **(हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी)**

"20वीं शताब्दी में कई मानवतावादी संगठनों में वैचारिक अंतर था। ब्रिटेन और अमेरिका केमानवतावादी संगठन बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक कालों में धर्म की रूढ़ि–गत समाज का आधार ही मानववाद है। बाद में कुछ मानवतावादी संगठन धर्म निरपेक्ष हो गए। धर्म निरपेक्ष मानवतावादी यह मानते थे कि परम्परागत धर्म की भूमिका को सीमित कर नये तरीके से पुनर्जीवित किया जाय। परन्तु यह मतभेद जारी रहा। अभी के ह्यूमनिस्ट विचारक मानववाद को एक नये जीवन पथ के रूप में देखते है। मानवतावाद का यह भारतीय दर्शन अनेक अंधविश्वासों, अनेक अलौकिक विष्वासों तथा अनेक अनैतिक नियमों की भ्रांतियों को दूर करता है। परन्तु इस प्रकार की नैतिकता नास्तिक विचार नहीं है और न लोगों को नास्तिक बना रहा है।"[17] – **(द क्राइसिस ऑफ द हुमैन पर्सन)**

"सी. लेमण्ट और कार्ल सगन दोनों आधुनिक ह्यूमनिस्ट हैं। ये दोनों मानवतावादी मानवतावाद को तर्क से सत्य की कसौटी पर आधारित मानते हैं और वैज्ञानिक अनुप्रयोगों के साथ सायुज्जय मानते हैं। ऐसा करते हुए सी. लेमण्ट और कार्ल सगन यह शर्त लगाते हैं कि मानवतावाद में अच्छाई अथवा बुराई का निर्णय सामूहिक कल्याण पर होनी हैं। मानव कल्याण व मानव हित से जो कुछ भी सम्बद्ध है, मानवतावाद है।"[18] – **(हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी)**

" ड्वाइट गिल्बर्ट जोन्स मानते हैं कि दर्शन में मानवतावाद मानव द्वारा स्वीकार किया जा सकने वाला एकमात्र दर्शन है। ड्वाइट गिल्बर्ट जोन्स मानते हैं कि मानववाद मानव द्वारा स्वीकार किया जा सकने वाला दर्शन हो सकता है। वास्तविक मानवतावाद धार्मिक उग्रता नहीं

है। वास्तविक मानवतावाद परम पिता परमेष्वर की ओर जाने वाला जीवन पथ है, जिस कार्य के लिए परमात्मा ने हमें यह जीवन दिया है और यही कार्य मानव जीवन को वास्तविक स्वरूप और आनन्द प्रदान करता है। आदमी की यही प्रवृत्ति यथार्थ मानवतावाद है।''[19] – **(द ह्युमेनिटी ऑफ मैन)**

''राजाराम मोहन राय धार्मिक सामाजिक सुधार आंदोलन के अग्रणी समाज सुधारक थे जो समाज को एक विशिष्ट जीवन धारा दिया। वे उस समय के ब्रिटिश सरकार से काफी प्रभावित थे। वे अंग्रेजों के उदार नीति, लोकतांत्रिक विचार और सबके लिए समान न्याय व्यवस्था के लिए ब्रिटिश हुकुमत के साथ थे ।''[20] – **(मानव और धर्म)**

''मानवतावाद सिद्धांत का आधार मानवीय हित, अधिकार और उत्थान है। इस सिद्धांत के अनुसार मानव भलाई सर्वोपरि है। साथ ही यह मानवतावाद सामाजिक मूल्यों तथा नैतिकता का समर्थक है।''[21] – **(द कंसेप्ट ऑफ मैन)**

<u>**अनुसंधान समस्या** Statement of the Problem :</u>

मानवतावादी ईश्वरचन्द विद्यासागर को गरीबों का संरक्षक के रूप में देखा अथवा माना जाता था। वे स्त्री शिक्षा और विधवार्विवाह अधिनियम बनाने के लिए आवाज उठाई तथा विधवा पुनर्विवाह के समर्थक थे। इन्होंने स्थानीय भाषा को बढ़ावा देने के लिए बांग्लाभाषा में लिखी गई किताबों को विषेष प्रोत्साहन दिया। इन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए जगह–जगह पर विषेष बालिका विद्यालय खोले। उनका मानना था कि संस्कृत और अंग्रेजीभाषा के ज्ञानो का समन्वय करके भारतीय और पाष्चात्य परम्पराओं की श्रेष्ठता को हासिल किया जा सकता है।

वे अनेक विद्यालय स्थापित किए तथा संध्या में संचालित विद्यालय भी जगह–जगह पर खोले जहाँ बंगला पढ़ाने की शिक्षा दी जाती थी। इन्होंने बंगला भाषा के गद्य तथा बंगला लिपि के वर्णमाला को सरल बनाया। उन्होंने संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए अनेक विद्यालय तथा कॉलेज में अध्ययन आरम्भ किया।

इन्होंने मैट्रोपोलिसकॉलेज के साथ ही अनेक विद्यालयों की भी स्थापना करवाई। संस्कृत अध्ययन और उसके शिक्षा प्रणाली में भी अनेक सुधार किए। इनके प्रयासों से संस्कृत

विद्यालय में अब समस्त जाती के लोगो के लिए शिक्षा के द्वार खुल गये जहां शिक्षा केवल ब्राह्मण और वैद्य तक ही सिमित थे।

उनके योगदान स्त्रीशिक्षा, विधवापुनर्विवाह और समाज सुधारक के रूप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। उनके सोच और उनकी कार्यपद्धति से मानवतावादी होने का परिचय मिलता है। इस शोध कार्य के द्वारा विभिन्न तथ्यों के माध्यम से ईष्वरचन्द्र विद्यासागर को मानवतावादी के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य Objectives of the Proposed Research Study :

इस शोध प्रबंध के उद्देश्य निम्न लिखित हैं–

1. विधवापुनर्विवाह की समस्याओं का दार्शनिक अध्ययन करना।
2. स्त्रीशिक्षा की समस्याओं का दार्शनिक अध्ययन करना।
3. विद्यासागर के पष्चिमी सभ्यता व संस्कृति संबंधी विचारों का दार्शनिक अध्ययन करना।
4. विद्यासागर का बंगला भाषा के विकास का योगदान का दार्शनिक अध्ययन करना।
5. बहुपत्नी प्रथा की समस्या का दार्शनिक अध्ययन करना।
6. बाल विवाह की समस्या का दार्शनिक अध्ययन करना।

उपकल्पना Hypothesis :

उपकल्पना निम्नलिखित है, ताकि अध्ययन के दौरान उन उपकल्पना का जाँच किया जा सकें–

1. विधवापुनर्विवाह आज भी प्रासंगिक है।
2. स्त्रीशिक्षा को बढ़ावा देकर स्त्री–पुरूष समानता को बढ़ावा दिया है।
3. ईश्वर चन्द्र पश्चिमी विचारों के समर्थक थे।
4. इनको बंगला भाषा के विकास के लिए उन्हें बंगाला भाषा का जन्म देने वाला माना जाता है।
5. समाज में बहुपत्नी प्रथा आज भी मौजुद है।
6. बाल विवाह का प्रचलन समाज में समाप्त हो गया है।

अनुसंधान पद्धति Research Methodology :

'' ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का मानवतावाद की अवधारणा : एक दार्शनिक अध्ययन'' का अध्ययन विवरणात्मक–विश्लेषणात्मक विधि से की जाएगी। विद्यासागर से सम्बन्धित पुस्तकालय, विभिन्न विष्वविद्यालयों, महाविद्यालय तथा शोध संस्थानों और फाउण्डेषन से प्राप्त शोध सामग्रियों को प्राथमिक स्रोत के रूप में अध्ययन में शामिल किया जाएगा। शोधकार्य हेतु द्वितीयक स्रोत पुस्तकालय से प्राप्त शोध ग्रंथों से की जाएगी। साथ ही उनसे से जुड़ी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित रपटों, रिपोर्टो, ग्रंथों इत्यादि से शोध कार्य सम्पन्न की जायेगी।

अध्ययन का महत्व Significance of Study :

ईश्वरचन्द्र की कृति आज भी अमर है। उनके दार्षनिक विचार अनुकरणीय है। गरीबी में पला–बढ़ा, सादगीपूर्ण जीवन जीने की कला इनसे सीखी जा सकती है। इस महामानव में भाषण देने की प्रखर क्षमता वक्ता के रूप में लोक में गुंजित है। लेखन क्षमता भी अद्भूत है, इन्होंने अपने जीवन काल में 52 ग्रंथों की रचना की। बंगला भाषा में तीस पुस्तकों की रचनाकर मानव से महामानव बनने की ओर पग पर चल दिये। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में स्मरणीयकार्य करके एक क्रांति ला दी। अनेक विद्यालय व महाविद्यालय बंगला व संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए जगह–जगह पर खोले गये। इस महामानव ने समाज की छोटी–छोटी समस्याओं को दीप दिखाया। उन समस्याओं को अपनी ताकत व उर्जा से स्फूर्त किया। लोगों में जनजागृति फैलायी। फिर उसे कानूनी ताकत व सामाजिक ताकत का एक हिस्सा बनाया।

ईश्वरचन्द्र परोपकार के भी धनी महामानव थे। दीन–दुखियों की मदद इनके जीवन का एक अटूट भाग था। जीवन के अंतिम कालखण्ड में इस महामानव ने अपने परिवार को छोड़कर निर्धनों व जरूरतमंदों के जनकल्याण में समर्पित कर दिया।

यह शोध अध्ययन वर्तमान समय में काफी प्रासांगिक है। आज के समय में भ्रष्टाचार का साम्राज्य स्थापित हो गया है। भ्रष्टाचार रूपी महादानव से मुक्ति या नियंत्रण पाने के लिए उनके जैसे महामानव का होना जरूरी है। इस महामानव के प्रासंगिक विचार आज भी अतुलनीय व अनुकरणीय हैं। विद्यासागर के जीवन शैली में कई प्रकार के कुविचारों का नितान्त अभाव था। कर्मठता, लगनषीलता, दयालुता परोपकारिता, स्वावलम्बिता इत्यादि गुण

आज के समय में भी अनुकरणीय है। इनके सिद्धांतों और विचारों को अपनाने से व्यक्ति और समाज अनेक दुराचारों से मुक्त हो सकता है।

शोध अध्ययन की सीमाएं Limitations of Study :

ये बंगाल एवं बिहार के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण देष के प्रेरणाप्रद महामानव है। इनकी कृति बंगला, संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाषित है, जो युग–युगान्तर तक इस विष्य को पथ–प्रदर्शित करता रहेगा। यह शोध कार्य उनकी व्यक्तिगत जीवन शैली का अध्ययन नहीं करेगा। बल्कि इस शोध कार्य में सिर्फ और सिर्फ उनके मानवतावादी कार्य, विचारों और सिद्धांतों का अध्ययन करेगा जो आगे आने वाली पीढ़ी को पथ प्रदर्शित करेगा।

इस शोध अध्ययन में पष्चिमी विचारों का अध्ययन नहीं किया जाएगा। परन्तु उनके द्वारा समर्थित पष्चिमी विचारों का अध्ययन किया जायेगा।

संभावित अध्यायीकरण Tentative Scheme of Chapterisation :

तथ्यों के समन्वित विष्लेषण के लिए अध्यायीकरण की योजना निम्नवत है–

1. प्राक्कथन

प्राक्कथन के अन्तर्गत इस विषय से सम्बंधित सामान्य परिचय का अध्ययन किया जाएगा।

2. उपलब्ध साहित्य

इस अध्याय के अन्तर्गत उनके सामान्य विचारों एवं सम्बंधित उपलब्ध साहित्य का विवेचन किया जाएगा।

3. 19वीं सदी में भारतीय दर्शन **में मानवतावादी विचारधारा**

इस अध्याय के अन्तर्गत उनके समकालीन अन्य समाज सुधारको के मानववादी विचारो का विष्लेषण किया जाएगा। 19वीं सदी में मानववादीविचारों का प्रारम्भिक प्रयोग हो रहा था।

इस समय विभिन्न समाज सुधारक अपने विचारों में मानवतावादी प्रयोग कर रहे थे। इस शोध कार्य में उनके विचारों का अध्ययन किया जाएगा।

4. शिक्षा के क्षेत्र में अवदान

इस अध्याय के अन्तर्गत उनके शिक्षा के क्षेत्र में उद्धरित मानवतावादी प्रयोग का अध्ययन किया जाएगा। उनके समय में महिला शिक्षा काफी उपेक्षित था उसका वृहद विष्लेषण किया जाएगा।

5. महिलाओं से संबंधित सुधारों का एक अवलोकन

इस अध्याय के अन्तर्गत उनके द्वारा सम्पादित महिलाओं से सम्बन्धित सुधारों का दार्षनिक अवलोकन किया जाएगा। खासकर बालविवाह, विधवा विवाह इत्यादि सुधारों का विस्तृत विवेचन किया जाएगा।

6. अछुतोद्धार के क्षेत्र में दार्शनिक अवदान

इस अध्याय के अन्तर्गत उनके द्वारा सम्पन्न समाज सुधारों का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। ये मानवता के प्रतीक थे ये समाज में हो रही कुरीतियों पर जबरदस्त कुठाराघात किया। इनके इन विचारों का विस्तृत दार्षनिक विवेचना की जाएगी।

7. निष्कर्ष

इस अध्याय के अन्तर्गत पिछले सभी अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

8. संदर्भ सूची

इसके अन्तर्गत इस शोध कार्य को सम्पन्न करने में जिन पुस्तकों, मूल ग्रंथों, जर्नल, पत्रिका, समाचार पत्र, का अनुषीलन किया जाएगा। उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

संदर्भ सूची Related References :

1. बसु, अंजलि (सम्पादित); ईश्वरचंद्र विद्यासागर : संसद बांगालि चरिताभिधान, साहित्य संसद, कलकता, 1976, पृ. 12
2. बन्धोपाध्याय, असितकुमार; बांगला साहित्ये विद्यासागर, मण्डल बुक हाउस, कलकत्ता, 1970, पृ. 18
3. जिउस्तिनिअनि, वीटो; होमो, हुमान्स और मानववाद का अर्थ, जर्नल ऑफ दी हिस्ट्री ऑफ आइडियाज, 46, भोल्युम– 2, अप्रैल – जुन, 1985, पृ. 167–195
4. डेवीस, टोनी; ह्युमनिज्मः दी न्यू क्रिटिकल इडीअम, ड्रेककिस, जॉन, सिरीज संपादक, स्टर्लिंग विश्वविद्यालय, रूटलेज, ब्रिटेन, 1997, पृ. 52 आईएसबीएन 0415–11052–1
5. प्रॉक्टर, रॉबर्ट; मानवता की परिभाषा, इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998, पृ. 14
6. सैले, ला; ह्युमनिज्म एंड एंटी ह्युमनिज्म, प्रॉब्लम्स ऑफ मॉडर्न युरोपियन थॉट, ओपन कोर्ट प्रेस, इलिनोईस, 1986, पृ. 67
7. आर. ऑसबॉर्न, हुमेनिज्म एण्ड मोरल थ्योरी, पृ. 92
8. सी. लेमण्ट, हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी, पृ. 7
9. चार्ल्स फ्रांसिस पौटर, हुमैनिज्म : ए न्यू रिलीजन, पृ. 80
10. सुरामा दासगुप्ता, डेवलपमेंट ऑफ मोरल फिलोसफी इन इंडिया, पृ. 4
11. रविन्द्रनाथ टैगोर, रिलीजन ऑफ मैन, पृ. 233
12. डेवीस, टोनी; ह्युमनिज्मः दी न्यू क्रिटिकल इडीअम, ड्रेककिस, जॉन, सिरीज संपादक, स्टर्लिंग विश्वविद्यालय, रूटलेज, ब्रिटेन, 1997
13. राल्फ बार्टन पेरी, द ह्युमेनिटी ऑफ मैन, पृ. 18–19
14. जैक्स मरीटेन, ट्रू हुमैनिज्म, पृ. 72
15. चार्ल्स फ्रांसिस पौटर, हुमैनिज्म : ए न्यू रिलीजन, पृ. 80
16. सी. लेमण्ट, हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी, पृ. 7
17. जे. बी. कोट्स, द क्राइसिस ऑफ द हुमैन पर्सन, पृ. 241
18. सी. लेमण्ट, हुमेनिज्म एज ए फिलोसफी, पृ. 7
19. राल्फ बार्टन पेरी, द ह्युमेनिटी ऑफ मैन, पृ. 18–19

20. डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री, मानव और धर्म, पृ. 81

21. एस. राधाकृष्णन एण्ड पी. टी. राजु (सं.), द कंसेप्ट ऑफ मैन, पृ. 256

<u>पुस्तक सूची Related Bibliography :</u>

1. बसु, अंजलि (सम्पादित); ईश्वरचन्द्र विद्यासागर : संसद बांगालि चरिताभिधान, साहित्य संसद, कलकता, 1976

2. घोष, अमरेन्द्र कुमार; युगपुरूष विद्यासागर : तुलिकलम, कलकत्ता, 1973

3. घोष, अमूल्यकृष्ण; विद्यासागर, द्वितीय संस्करण, एम. सी. सरकार, कलकत्ता, 1917

4. बन्धोपाध्याय, असितकुमार; बांगला साहित्ये विद्यासागर, मण्डल बुक हाउस, कलकत्ता, 1970

5. इन्द्रमित्र; करूणासागर विद्यासागर, आनन्द पब्लिशर्स, कलकत्ता, 1966

6. जिउस्तिनिअनि, वीटो; होमो, हुमान्स और मानववाद का अर्थ, जर्नल ऑफ दी हिस्ट्री ऑफ आइडियाज, 46, भोल्युम– 2, अप्रैल – जुन, 1985

7. डेवीस, टोनी; ह्युमनिज्मः दी न्यू क्रिटिकल इडीअम, ड्रेककिस, जॉन, सिरीज संपादक, स्टर्लिंग विश्वविद्यालय, रूटलेज, ब्रिटेन, 1997, आईएसबीएन 0415–11052–1

8. प्रॉक्टर, रॉबर्ट; मानवता की परिभाषा, इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998

9. डे, ब्रजेन्द्रकुमार; करूणासिन्धु विद्यासागर, मण्डल एन्ड सन्स, कलकत्ता, 1970

10. मित्र, राधारमण; कलिकाताय विद्यासागर, जिज्ञासा, कलकत्ता, 1942

11. सैले, ला; ह्युमनिज्म एंड एंटी ह्युमनिज्म, प्रॉब्लम्स ऑफ मॉडर्न युरोपियन थॉट, ओपन कोर्ट प्रेस, इलिनोईस, 1986

12. बसु, शंकरीप्रसाद; रससागर विद्यासागर, द्वितीय संस्करण, द्रेज पब्लिशिंग, कलकत्ता, 1992

13. विद्यारत्न, शम्भुचन्द्र; विद्यासागर चरित ओ भ्रमणिरास, चिरायत, कलकत्ता 1992

14. अधिकारी, सन्तोषकुमार; विद्यासागर जीबनपन्जि, साहित्यिका, कलकत्ता 1992

15. अधिकारी, सन्तोष कुमार; आधुनिक मानसिकता ओ विद्यासागर, विद्यासागर रिसर्च सेन्टर, कलकत्ता, 1984

16. एस. राधाकृष्णन एण्ड पी. टी. राजु (सं.), द कंसेप्ट ऑफ मैन, पृ. 256
17. रविन्द्रनाथ टैगोर, क्रियटिव युनिटी, पृ. 3
18. पिट्रिम ए. सोरोकिन, द रिकन्सट्रक्शन ऑफ हुमेनिटी, पृ. 69
19. डॉ. धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, भूमिका
20. एम. एन. राय, न्यू हुमेनिज्म, पृ. 39
21. गेब्रियल मार्शल, मैन अगेन्स्ट हुमैनिटी, पृ. 192
22. एम. के. गांधी, ऑल मेन आर ब्रदर्स, पृ. 118
23. डॉ. नवल किशोर, मानववाद और साहित्य, पृ. 183
24. एम. के. गांधी, माई एक्सपेरिमेण्ट विथ ट्रूथ, पृ. 37
25. श्री अरविन्दो, द आईडियल ऑफ हुमैन युनिटी, पृ. 341
26. शांति जोषी, राधाकृष्णन का विश्व दर्शन, पृ. 33
27. रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी एण्ड डिप्रेस्ड हुमैनिटी, पृ. 6
28. जे. बी. कोट्स, द क्राइसिस ऑफ द हुमैन पर्सन, पृ. 241

शोध पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर **शोधार्थी का हस्ताक्षर**

शोध प्रबंध की यह रूपरेखा शोधार्थी द्वारा प्रथम दृष्टया तैयार की गयी है जिसमें कालांतर में शोध के दौरान परिवर्तन किया जा सकता है जिससे इसे और बेहतर और सटीक बनाया जा सके। विभाग के सभी विद्वान शिक्षकगण द्वारा दिया गया सुझाव शोध कार्य के दौरान स्वागत योग्य है।